RJPP, Vol. 15, No. 3, 2017, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 4.0000 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43279

विकास प्रशासन

डॉ० इन्द्रजीत सिंह
प्रवक्ता राजनीति विज्ञान, सिद्धार्थ महाविद्यालय,
अखलौर खेडी, देवबन्द सहारनपुर।

सारांश

किसी भी देश के विकास के लिए परिवर्तनशील, लक्ष्योन्मुख, कुशल, आधुनिक, विकासात्मक प्रकृति की दृष्टि से सक्षम एवं ईमानदार, कार्य के प्रति निष्ठा रखने वाले प्रश्न का होना अति आवश्यक है। सकारात्मक रूप से सक्रिय प्रशासन के अभाव में देश और उसमें निवास करने वाले लोगों के विकास की कल्पना करना व्यर्थ है। विकास प्रशासन एक गतिशील अवधारणा है जिसका उद्देश्य जन–सामान्य की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, आदि समस्याओं को समझकर उनका निदान करना तथा उन्हें सुदृढ़ व सक्षम बनाने के लिए कुछ नवीन योजनाओं एवं नीतियों का निर्माण एवं उनका कार्यान्वयन करना है तथा देशहित तथा विकास के लक्ष्यों को निर्धारित करके उनमें सकारात्मक परिवर्तन के साथ गतिशीलता प्रदान करना है और लक्ष्यों को ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करना होना है।

मूल शब्द–*परिवर्तनशील, लक्ष्योन्मुख, विकासात्मक, सकारात्मक, गतिशीलता कार्यान्वयन, सुदृढ़।*

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० इन्द्रजीत सिंह

विकास प्रशासन,

RJPP 2017, Vol. 15, No. 3, pp. 69-74, Article No. 10 (RP587)

Online available at : *http://anubooks.com/?page_id=2004*

प्रस्तावना

विकास प्रशासन एक गतिशील अवधारणा है। जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में गतिशीलता प्रदान करना है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अफ्रीका तथा एशिया के बहुत से देश उपनिवेशी ताकतों के चंगुल से आजाद हुए उन देशों की सामान्य आर्थिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक स्थिति बडी सोचनीय थी लेकिन अमेरिका में विकास के सम्बन्ध में विचार किया जाने लगा तो प्रायः यह देखा गया कि शहरी तथा ग्रामीण नागरिकों के मध्य काफी विषमता है। तथा गांव में कुछ व्यक्ति ऐसे है। जो साधन सम्पन्न है। तथा अधिकांश लोग ऐसे है। जो अपनी दो वक्त की रोटी के लिए सुबह से शाम तक मारे–मारे फिरते हैं। जबकि देश की तीन चौथाई जनसंख्या इन्हीं गांवों में निवास करती है। यदि देश को शक्तिशाली बनाना है। तो हमे गांवों को गरीबी तथा पिछडेपन से दूर करना होगा इस सन्दर्भ में विकास क्या है। प्रशासन क्या है। यह जान लेना अनिवार्य है। क्योंकि उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने में विकास प्रशासन की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

विकास क्या है–

विकास शब्द गतिशीलता का द्योतक है। विकास शब्द अर्थशास्त्र से राजनीति शास्त्र और उसके बाद लोक प्रशासन में लिया गया है। ''अर्थशास्त्र की दृष्टि से विकास शब्द के दो अर्थ लगाये जा सकते हैं पहला ''टेक ऑफ की स्थिति'' यहाँ से अर्थव्यवस्था स्वतः ही आगे बढती रहती हैं और दूसरा इस स्थिति तक पहुँचने की प्रक्रिया अतः ''टेक ऑफ की स्थिति'' पाने पर विकसित और उससे पहले विकासशील अवस्था कही जाती है।'' राजनीति शास्त्र के विद्वान विकास शब्द के अर्थ पर एक मत नहीं है। कतिपय विद्वान राजनीतिक विकास का अर्थ राजनीतिक रूप से आधुनिकता की प्राप्ति से लगाते हैं। ''विकास शब्द का कोषगत अर्थ उद्देश्य मूलक है क्योंकि इसका उल्लेख प्रायः उच्चतर पूर्णतर और अधिकतर परिपक्कवता पूर्ण स्थिति की ओर बढना है। विकास को मन की स्थिति तथा एक दिशा के रूप में भी देखा गया है। एक निश्चित लक्ष्य की अपेक्षा विकास एक विशिष्ठ दिशा में परिवर्तन की गति है।'' के बारे में चाहे वे सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत, नागरिक हो या सैनिक बडे कार्य हो या छोटे सभी के सम्बन्ध में लागू होता है। यह एक सहयोगी कार्य है जो सुनिश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है

प्रशासन क्या है

किसी उद्देश्य के लिए किये जाने वाले सभी प्रकार के प्रयत्नों की तुलना में प्रशासन आधुनिक युग की ही विशेषता नहीं है अपितु इसकी झलक सभ्यता के विकास के आरम्भ में ही भली–भांति दिखायी देने लगी थी। आदिमकाल के गृह स्वामी तक के लिए यह महत्व की वस्तु थी मिस्र देश के पिरामिडों का निर्माण आश्चर्य जनक प्रशासकीय सफलता थी और यही बात रोमन साम्राज्य की व्यवस्था के बारे में कही जा सकती है। प्रशासन सर्वव्यापक रहा है।''

प्रशासन की प्रकृति के विश्लेषण सम्बन्धी दो दृष्टिकोण है। इन्हें हम सुविधा के विचार से एकीकृत तथा प्रबन्धकीय दृष्टिकोण कह सकते हैं। कुछ विचारको के मतानुसार निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सम्पादित की जाने वाली क्रियाओं का समग्रीकरण या योग ही प्रशासन है। चाहे वे क्रियाये

लेखन, प्रबन्धन तथा तकनीक सम्बन्धी ही क्यों न हो इस प्रकार उद्यम विशेष में कार्यरत सन्देश वाहक फौरमैन, चौकीदार, सफाई कर्मचारी तथा शासन के सचिवों तथा प्रबन्धकों के कार्यो को प्रशासन की संज्ञा देते हैं यह एकीकृत दृष्टिकोण है इस दृष्टिकोण को स्वीकार करने पर हमे किसी भी उद्यम में कार्यरत छोटे से लेकर बडे व्यक्तियों तक के कार्यो को प्रशासन का ही एक भाग मानना होगा। एक शतक के अन्तराल में प्रशासन में अनेक मोड आये। आज प्रशासन विकास प्रशासन के रूप में जाना जाने लगा जिसका अर्थ समझना अति आवश्यक है जो निम्न माध्यम से समझा जा सकता है।

विकास प्रशासन का अर्थ– विकास प्रशासन शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग भारत के एक प्रशासनिक अधिकारी यू0एल0 गोस्वामी द्वारा अपने एक लेख ''दि स्ट्रकचर ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन इण्डिया'' ''जो 1955 में ''दि इण्डियन जनरल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन'' में प्रकाशित हुआ विकास प्रशासन के अन्य प्रतिपादकों में जार्ज ग्राण्ट का नाम अग्रणी माना जाता है। इसके बाद वीडनर, रिग्स, हैडी, माण्टगोमरी, पाई पानिन्दीकर, आदि विद्वानों ने ''विकास प्रशासन'' की अवधारणा की व्याख्या प्रस्तुत करने में सहयोग दिया।

कुछ विद्वान विकास प्रशासन का अर्थ आधुनिकीकरण से लगाते है और कुछ इसे आर्थिक विकास की प्रक्रिया मानते है। जबकि कुछ का मानना है कि यह प्रशासनिक विकास का पर्यायवाची है तथा कुछ इसे जनता की बढती विकासात्मक आवश्यकताओं एवं मांगों को सन्तुष्ट करने की क्षमता से लगाते हैं।

विकास प्रशासन की व्याख्या से सम्बन्धित दो मत है। माण्टगोमरी तथा फेनसोड जो विकास प्रशासन को संकीर्ण अर्थ में लेता है। माण्टगोमरी के अनुसार ''यह अर्थव्यवस्था तथा पूँजी की सम्पूर्ण संरचना में तथा इसके कम समाज सेवाओं में विशेषकर स्वास्थ्य और शिक्षा में बाधक होता है।'' फेनसोड के शब्दों में ''आधुनिकीकरण और कार्यशीलता के मार्ग पर अग्रसर विकासशील देशों द्वारा हाथ में लिए गये तमाम नये कार्यो की श्रृंखला को विकास प्रशासन अपने में समाहित करता है।'' विकास प्रशासन सामान्य अर्थ में आर्थिक विकास की योजना बनाने तथा राष्ट्रीय आय को बढाने के लिए साधनों को प्रवृत्त करने तथा बांटने का कार्य करता है। इस प्रकार इस मत के विचार से विकास प्रशासन का मात्र कार्यक्रम तथा परिणमाभिमुख दृष्टिकोण है। जो विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वर्तमान और नवीन स्रोतों तथा कौशलों को प्रवृत्त करता है।

दूसरी विचार धारा का प्रतिनिधित्व ल्यूसियनपाई, फ्रेड डब्ल्यू रिग्स तथा वीडनर करते हैं। जिन्होंने विकास प्रशासन शब्द को व्यापक अर्थ में लिया है। इसके अनुसार विकास प्रशासन एक या दूसरे से अधिकारयुक्त रूप में निर्धारित हो प्रगतिशील, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में संगठन की मार्गदर्शन प्रक्रिया है। इस अर्थ को स्वीकार करने में विकास प्रशासन में संसार के नव उदित राष्ट्रों में राष्ट्र निर्माण की बृहद प्रक्रिया को शामिल करना होगा इस अर्थबोध में विकास प्रशासन लोक प्रशासन के अध्ययन की अविकल धारणा बन जाती है। शारांशतः यह कहा जा सकता है। कि विकास प्रशासन आवश्यक रूप से प्रशासन की वह संकल्पना है। जो संरचना अभिमुख की अपेक्षा कार्याभिमुख अधिक है। यद्यपि इसमें परम्परागत एवं नैत्यक प्रकार की प्रशासनिक प्रणाली का अध्ययन होता है। फिर भी वह कार्यक्रम नियोजन एवं कार्यान्वयन

के उपकरण के रूप में इसकी क्षमताओं का अनुमान करने के लिए प्रषासनिक प्रणाली की गतिकी से अधिक सम्बद्ध है।

निष्ठा के अर्थ में विकास प्रशासन को लक्ष्न्योन्मुख सेवार्थी केन्द्रित उत्तरदायी जनता की इच्छाओं एवं मांगों के प्रति अनुक्रियाशील होना पडता है। अभिरूचि के अर्थ में विकास प्रशासन लचीला परिणामोन्मुख एवं अनुकूल दशा वाला है। पाई पानन्दीकर एवं क्षीर सागर ने विकास में प्रशासनिक व्यवहार के अपने अध्ययन में चार व्यवहारिक पूर्वाकांक्षाओं (1) परिवर्तन अभिमुख (2) परिणाम अभिमुख (3) जनसहभागिता अभिमुख (4) कार्य के प्रति प्रतिबद्धता अभिमुख वाला बताया है।

विकास प्रशासन का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक दृष्टि से कमजोर तथा पिछडे हुए समाज को सक्षम तथा सुदृढ बनाकर आगे लाना है। तथा व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उन्हें ऐसी स्थिति प्रदान करना है। जो देश के विकास में अपना सहयोग प्रदान कर सके और सामान्यतयाः विकास प्रशासन का मुख्य उद्देश्य नवोदित राष्ट्रों के सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास में योगदान देना है। विकास प्रशासन का उद्देश्य राष्ट्र के उत्थान के लिए विकास सम्बन्धी नीतियों का निर्माण करना तथा उन नीतियों के द्वारा निर्धारित किये गये लक्ष्यों को प्राप्त करना है तथा राष्ट्र के उत्थान के लिए विकास कार्यो में जनता की सहभागिता को सुनिश्चित करने की योजना का निर्माण करना व उस योजना को क्रियान्वित करने का प्रयास करना है इसके लिए किये गये कार्यो के परिणामों की समीक्षा करना तथा उनसे सम्बन्धित कमियों को दूर करने के यथा सम्भव प्रयास करना तथा देश में आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के उपलब्ध साधनों का प्रयोग करके नवीन कार्यो का अन्वेशण करना है तथा शासन द्वारा निर्मित की जाने वाली नीतियों में अपना सहयोग देना और उन्हें अच्छे ढंग से क्रियान्वित करना तथा कार्यक्रम तथा परियोजनाओं की व्यवस्था करना भी विकास प्रशासन का उद्देष्य है। विकास प्रषासन परिवर्तनशील तथा गतिशील है। इसमें उन्हीं कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है। जिनका सम्बन्ध विकास के कार्यो से होता है। यही कारण है कि वर्तमान समय में विकास प्रशासन को अपेक्षित महत्ता दी जाती है। विकास प्रशासन के माध्यम से विकासशील राष्ट्र अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होते है। कि विकास प्रशासन में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक आदि क्षेत्रों की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। क्योंकि इन क्षेत्रों के कारण ही प्रशासन के कार्य सम्पन्न होते हैं। विकास प्रशासन की अपनी विशेषतायें निम्न प्रकार है।

विकास प्रशासन में किन–किन तत्त्वों या लक्षणों का समावेश होता है तथा किसी भी प्रक्रिया के तत्त्वों या विशेषताओं के माध्यम से यह आकलन किया जा सकता है। कि उस प्रक्रिया के मूल में क्या निहित है। यह जानना आवश्यक है ठीक उसी प्रकार से विकास प्रशासन के मूल को जानने के लिए उसकी विशेषताये अथवा लक्षण जानना अति आवश्यक है। जो निम्न प्रकार है। जैसे–

परिवर्तनशीलता– परिवर्तनशीलता विकास प्रशासन की प्रथम विषेशता है विकास प्रशासन किसी भी व्यवस्था में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन का पक्षधर है। विकास का प्रशासनिक तन्त्र

निश्चित तथा गतिहीन होकर परिवर्तनशील होता है। अतः परिवर्तनशीलता विकास प्रशासन का एक प्रमुख गुण है।

लक्ष्योन्मुख– विकास प्रशासन का मुख्य केन्द्र बिन्दु निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना तथा मूल्यों का मूल उद्देश्य व्यवस्था को गति प्रदान करना तथा आगे ले जाना है। ''वीडनर का मत है। कि विकास प्रशासन लक्ष्य अभिमुखी प्रशासन है।''

विकासात्मक प्रकषति– विकास प्रषासन का प्रमुख कार्य विकासात्मक कार्यक्रमों को लेकर चलना है इसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोण से पिछडे समाज का विकास करना है।

प्रजातान्त्रिक मूल्यों से सम्बन्धित– विकास प्रशासन का मुख्य कार्य जन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयास करना है साथ ही प्रजातांत्रिक मूल्यों से सम्बद्ध रहता है। क्योंकि इसमें मानव अधिकारों और मूल्यों के प्रति सम्मान, जनहित का उद्देश्य तथा उत्तरदायित्व की भावना निहित रहती है। चूंकि विकास प्रशासन का सम्बन्ध सरकारी प्रशासन द्वारा किये जाने वाले प्रयासों से है और सरकारी प्रयास जनकल्याण और प्रजातान्त्रिक मूल्यों से जुडे रहते हैं विकास प्रशासन को प्रजातान्त्रिक मूल्यों से पृथक नहीं किया जा सकता है।

आधुनिकीकरण– नवोदित राष्ट्रो के विकास के लिए आधुनिक दृष्टिकोण अपनाना आवष्यक हो गया है। साथ ही आज के आधुनिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विकास प्रशासन को अपने आपको योग्य बनाना होगा इसके लिए प्रशासनिक आधुनिकीकरण को बढावा देना होगा इसके लिए विकास प्रशासन को विकसित देशों से मापदण्ड तथा तकनीके प्राप्त करनी होगी।

प्रशासनिक कुशलता– कुशलता प्रशासन की सफलता की कुंजी है। विकास प्रशासन में कुशलता के महत्व को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि इसके अभाव में विकास के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर पाना असम्भव है। जबकि विकास प्रशासन इस कार्य के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। कि प्रशासनिक विकास के माध्यम से प्रशासन की कार्यकुशलता में वृद्धि की जाये।

आर्थिक विकास– आर्थिक विकास तथा विकास प्रशासन का परस्पर महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। प्रशासनिक विकास के लिए आर्थिक विकास अति आवश्यक है। विकासशील राष्ट्रो में आर्थिक योजनायें तथा विकास सम्बन्धी कार्यक्रम विकास प्रशासन के सहयोग से ही किये जाते हैं विकास प्रशासन ऐसे प्रशासनिक संगठन की रचना करता है जो देश की आर्थिक प्रगति को सम्भव बनाता है तथा आर्थिक विकास के लिए मार्ग प्रसस्त करता है। राष्ट्र के विकास के लिए आर्थिक योजनायें अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं और इन्हें लागू करने में विकास प्रशासन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

परिणामोन्मुख– विकास प्रशासन का परिणामोन्मुख होना इसकी एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है। विकास प्रशासन से अपेक्षा की जाती है। कि वह निर्धारित उद्देश्यों को एक निश्चित समय में पूरा करके अच्छे परिणाम हासिल करे विकास प्रशासन में परिणामों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

नियोजन– पाई पानिन्दीकर विकास प्रशासन को ''नियोजित परिवर्तन'' के रूप में देखते है एक निश्चित अवधि में सुनिश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने के कार्यक्रम के रूप में नियोजन समय

तथा विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने वाले साधनों के अधिकतम सम्भव उपयोग में सहायक होता है। अतः अधिकांश विकासशील देशों ने सामाजिक आर्थिक नियोजन को विकास की रणनीति के रूप में अपनाया है।

नवाचार– विकास से सम्बन्धित विविध समस्याओं के समाधान के लिए विकास प्रशासन का तरीका परम्परा जनित अथवा सिद्धान्तवादिता से बंधा हुआ नहीं होता इसके बजाय वह नये ढाँचों, कार्यक्रमों पद्धत्तियों को अपनाने पर बल देता है।

प्रशासन तन्त्र में लचीलापन– परम्रागत प्रशासन तन्त्र नौकरशाही पर आधारित था। जबकि विकास प्रशासन में प्रशासन तन्त्र को राजनीतिज्ञों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करना होता है प्रशासन नियमों के जाल में ही बंधा नहीं रहता अपितु विशिष्ट परिस्थितियों में प्रशासन को स्वः विवेक से नियम लागू करने की स्वतन्त्रता होती हैं।

सहभागिता– विकास प्रशासन में विकास कार्यक्रम बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में लोगों का सहभागी होना निश्चित है। भारत में पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से लोगों की विकास कार्य में सहभागिता को प्रेरित किया जा रहा है। वस्तुतः विकास का प्रशासनिक तन्त्र कार्य व अधिकार सौंपने तथा सलाह मशविरा करने की रणनीति का प्रभावी ढंग से उपयोग करता है इसलिए अनुशासन को आधार तथा लक्ष्योन्मुखी बनाता है।

लाभ–भोगी अभिमुखीकरण– विकास प्रशासन का एक प्रशासनिक तन्त्र लाभ–भोगी अभिमुखी प्रशासन है। इसका उद्देश्य उन्हीं लोगों को अपनी सेवायें तथा उत्पादन का अधिक लाभ पहुँचाना है जिनके लिए प्रयत्न किया गया है। यह अपने लाभ भोगियों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देता है और अपने कार्यक्रम, नीतियों और कार्यकलापों को इन्हीं आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की कोशिश करता है।

प्रभावी एकीकरण– विकासात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अधिकारियों और समूहों के दल को साथ–साथ चलने के लिए प्रशासनिक संगठन में एकीकरण करने की उच्च कोटि की क्षमता आवश्यक है। वस्तुतः उच्च कोटि का समन्वय या एकीकरण विकास प्रशासन की विशेषता है। यदि एकीकरण का स्तर नीचा है तो विकास के प्रतिफलों का प्रतिकूल प्रभाव पडने की सम्भावना रहेगी, विकास प्रशासनिक स्थिति में विभिन्न संगठनों और इकाईयों के बीच विभिन्न पदों और कार्यकर्ताओं के बीच विभिन्न स्तरों पर समन्वय प्रभावी करना आवश्यक है। तथा समन्वय के अभाव में संसाधनों की बर्बादी और प्रभावशीलता की कमी ही होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बी0एल0 फाडिया लोक प्रशासन साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 2002 पृष्ठ 104
2. अवस्थी एवं माहेश्वरी, लोक प्रशासन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल 2005 पृष्ठ–46
3. डॉ0 बी0एल0 फडिया, लोक प्रशासन साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ –104
4. रूमकी बसु, लोक प्रशासन, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यटर्स नई दिल्ली 16 2000, पृष्ठ–388
5. रूमकी वसु, लोक प्रशासन, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स, नई दिल्ली–16 वर्ष–2002 पृष्ठ 388–384